

सत्याग्रह को जीवन में उतारा गांधी ने। अहिंसक क्रांति को सफल बनाया गांधी ने।।

गांधी भवन न्यास ने ७ सितंबर से गांधी भवन में 'आओ जाने गांधी को' कार्यक्रम आरंभ किया है। इस अवसर पर यह आवश्यक है कि लोग आजादी के आंदोलन में गांधी की भूमिका को भली प्रकार जानें-समझे।

आंदोलन में जिन क्रांतिकारियों की अहम भूमिका रही उन्हें हम दो वर्गों में बांटकर देख सकते हैं- १. सशस्त्र क्रांतिकारी २. अहिंसक क्रांतिकारी। इसका अर्थ यह है कि क्रांतिकारी दोनों ही थे भले ही उनमें से एक वर्ग ने ब्रिटिश अधिनायकवाद के विरुद्ध परदे के पीछे रहकर सशस्त्र भूमिका निभाई हो तो दूसरा वर्ग वह था जिसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़कर अहिंसक आंदोलन छेड़ा हो।

क्रांतिकारियों में जो सबसे बड़ा नाम उभरता है उसे पूरी दुनिया मोहनदास करमचंद गांधी के नाम से जानते हैं जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़कर अहिंसक पद्धति से आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने सत्याग्रह का मार्ग अपनाया जिसका विकास दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान हुआ था। सत्याग्रही अहिंसक पद्धतियों द्वारा सत्य की साधना करता है और इसी दृष्टि से गांधीजी ने अंग्रेजों के विरुद्ध सत्याग्रह का मार्ग अपनाया। सत्याग्रही का प्रमुख नैतिक सिद्धांत यह है कि जो व्यक्ति सत्य और अहिंसा के विरुद्ध है वह त्याज्य और वर्ज्य नहीं है बल्कि सत्याग्रह करते हुए यह कोशिश जारी रखना है कि सत्य और अहिंसा को सिद्धांत के रूप में ना मानने वाले व्यक्तियों और संगठनों को भी अपने साथ जोड़े रखने का प्रयास करना है। गांधीजी ने अपने आंदोलन के दौरान जनमत को सर्वाधिक महत्व दिया। उनका यह विश्वास था कि ऐसे मार्ग पर चला जाए जिसमें व्यक्तिगत धर्म या नैतिक सिद्धांत आड़े ना आते हों। इस दृष्टि से उन्होंने स्वयं नैतिक अनुशासन का अभ्यास किया और उनके साथ आश्रम में रहने वाले सज्जनों को भी इसका अभ्यास कराया। गांधीजी खुद कहते थे- मैंने अपने जीवन में जो भी महत्वपूर्ण कार्य किए हैं उन्हें मैंने बुद्धि के सहारे नहीं बल्कि अंतः प्रेरणा से किए हैं। वष वर्ष १९३४ में उन्होंने कहा था- उनका विश्वास है कि मेरा पथ प्रदर्शक ईश्वर है। इसी वर्ष गांधीजी कांग्रेस से अलग हो गए किंतु वरिष्ठ कांग्रेसजनों के अनुरोध पर वे कांग्रेस के माध्यम से ही आजादी के आंदोलन में सक्रिय रहे। जुलाई १९४० में कांग्रेस ने उन्हें हटा दिया फिर भी वे अपने मार्ग पर अडिग रहे। अगले वर्ष उन्होंने लुई फिशर से चर्चा करते हुए कहा- यद्यपि महत्व के मामलों में उन्हें पथ प्रदर्शन, श्रद्धा और अंतः प्रेरणा द्वारा मिलता है परंतु वे उसका तब तक अनुसरण नहीं करते जब तक उनकी बुद्धि उसका



अग्र विचार
विचार प्रवाह-१८६

कैलाश आदमी

समर्थन नहीं करती। उन्होंने अपने उपवासों का जिक्र करते हुए कहा उपवास प्रारंभ करने के पूर्व उनकी बुद्धि ने सदैव उनकी अंतः प्रेरणा का समर्थन किया। इसके पूर्व गांधीजी १९२२ में बाराडोली सत्याग्रह, १९३० में नमक सत्याग्रह और १९४०-४१ में सत्याग्रह प्रारंभ करने का निर्णय ले चुके थे जो उनकी श्रद्धा व अंतः प्रेरणा पर आधारित थे। उनका कहना था- अहिंसा के पथ पर मनुष्य को प्रायः नितांत अकेला ही चलना पड़ता है। आजादी के आंदोलन में अधिनायकवाद के विरुद्ध संघर्ष का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा था- मैं निरंकुश तंत्र से घृणा करता हूं, अपनी स्वाधीनता को महत्व देता हूं और उतना ही स्वाधीनता और स्वतंत्रता को दूसरों के लिए भी मूल्यवान मानता हूं। मुझे एक भी व्यक्ति को अपने साथ ले चलने की इच्छा नहीं है यदि मैं उसकी बुद्धि को प्रभावित ना कर सकूं। विशेषकर १९४०-४१ के सत्याग्रह का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा- असीम यातना के बाद सत्याग्रह आंदोलन की उत्पत्ति हुई थी। मैं विनम्रतावश अपने को ईश्वर के सामने शून्यवत समझता हूं।

असहयोग आंदोलन का जिक्र करते हुए वर्ष १९२५ में उन्होंने व्यक्ति किया था- मेरे असहयोग के पीछे बुरे से बुरे विरोधी के साथ भी अल्पतम बहाने पर सहयोग करने की प्रबलतम इच्छा है। मुझ सरीखे अपूर्ण मनुष्य की दृष्टि में, जिसे सदा ही ईश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता है, कोई भी आदमी सुधार से परे नहीं है.. असहयोग हिंसात्मक भी हो सकता है लेकिन हिंसात्मक असहयोग केवल बुराई को बढ़ाता है।

कांग्रेस ने भले ही दिल्ली और पूना के प्रस्तावों (७ और २७ जुलाई १९४०) के माध्यम से गांधीजी को नेतृत्व के भार से मुक्त कर दिया हो और दो शताब्दियों तक स्वीकृत अहिंसा के सिद्धांत के प्रतिकूल इस शर्त पर इंग्लैंड के साथ सक्रिय रूप से युद्ध प्रयत्न में सहयोग करने का वचन दिया कि इंग्लैंड भारत की स्वाधीनता को मान लेगा। यह बात अलग है कि कांग्रेस के प्रस्ताव को ब्रिटिश सत्ता ने खारिज कर दिया। कांग्रेस ने १६ सितंबर १९४० को बंबई प्रस्ताव के जरिए गांधीजी के नेतृत्व को फिर स्वीकार किया और गांधीजी ने १९४२ में 'भारत छोड़ो' आंदोलन का नारा बुलंद किया जिसके फलस्वरूप आगे चलकर अंग्रेजों को भारत छोड़ने तथा भारतवासियों को पूर्ण स्वाधीनता देने का निर्णय लेना पड़ा। अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

सत्याग्रह को जीवन में उतारा गांधी ने।
अहिंसक क्रांति को सफल बनाया गांधी ने।।



आजाद-खयाल रशीदा जामिया मिल्लिया इस्लामिया से पढ़कर निकली थी। ईद-मिलादुन्नबी का जुलूस सड़कों से गुजर रहा था। जुलूस में पर्दानशीं औरतें तलवारबाजी के करतब दिखा रही थीं। यह दृश्य मौलाना को नागवार गुजरा। उन्होंने वहीं खड़े होकर कहा— हमारे मजहब में औरत जात के लिए घर की चारदीवारी में रहना ही मुनासिब बताया गया है। औरतें इस तरह सड़कों पर न निकलें। औरत के लिए पर्दा लाजिम है। बात रशीदा के कानों तक पहुंची। वह मौलाना के पास जा पहुँची। वह अदब से बोली— मौलाना साहब, सूरह अल-अहज़ाब की आयतें आपने भी पढ़ी होगी। मौलाना ने उसे घूरकर देखा। आयत ३५ में पुरुषों और महिलाओं का अलग-अलग और बराबरी से नाम लिया गया है.....।

मौलाना ने उसे गुस्से से देखा। रशीदा ने आयत ३५ में आदमजात के लिए बताया गए दस गुण—इस्लाम, ईमान, आज्ञाकारिता, सब,



लघु कथा

अरुण कुमार डनायक

सच्चाई, नमाज़, रोज़ा, सड़का (दान), शील और अज़ाह की याद—गिनाते हुए कहा, ये गुण पुरुषों और औरतों, दोनों के लिए बराबरी से बताए गए हैं। फिर भेदभाव क्यों? मौलाना का चेहरा तमतमा उठा—ऐ लड़की! तू अपने आपको आलिमा समझती है? जी, दुरुस्त फरमाया आपने। लेकिन पैगम्बर साहब की बीवी हज़रत आयशा (रजि.) ने भी 'जंग-ए-जमल' में हिस्सा लिया था, रशीदा ने शान्तिपूर्वक कहा।

बस! बेहूदा दलीलें...। अपनी ज़बान को लगाम दे, मौलाना चीखे। रशीदा चुप रही। मौलाना तल्ख स्वर में बोले—'तालीम ने तुम्हें अदब नहीं, गुस्ताखी दी है। ऐसी आजादी तुम्हारे लिए मुनासिब नहीं। बेहतर है, अपने घर लौट जाओ।'

रशीदा ने देखा, जुलूस की तलवारें म्यान में जा रही थीं। उसकी आँखों में एक चमक उठी। वह मौलाना की ओर मुड़ी और बोली— मौलाना साहब, हक़ आसानी से कब मिले हैं?

- भोपाल

कला, संस्कृति, पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू को भावभीनी श्रद्धांजलि

निर्दलीय संवाद
खुंटी। झारखंड के कला, संस्कृति, पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुए अखिल भारतीय सांस्कृतिक विकास महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, फिल्मकार, साहित्यकार तपन कुमार घोष ने कहा कि वे कला, संस्कृति, पर्यटन के विकास के लिए झारखंड के मंत्री के रूप में अच्छी काम कर रहे थे। उनके द्वारा किए गए काम के लिए उन्हें महासंघ की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। महासंघ



के राष्ट्रीय संगठन सचिव शंकर शंभु राजेश, सचिव प्रशांत कुमार, उपाध्यक्ष डॉ पी, के, विश्वास, डॉ अनुप कुमार, छत्रपाल सिंह मुंडा, गोपीनाथ सिंह मुंडा, डॉ धर्मदेव नाथ तिवारी, मनोहर प्रकाश राम, डॉ दीपक कुमार घोष, महासचिव मार्शल बारला, जितेन्द्र कुमार पांडेय, समाज सेवी एवं कला प्रेमी विकास जायसवाल, अनिल कुमार उम्मीद, विश्वनाथ गंडू आदि ने मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू को शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित कर उनकी आत्मा के शांति के लिए दो मिनट मौन धारण किया।

गांधी सप्ताहांतर्गत 'आओ जानें गांधी को' प्रतियोगिता का हुआ शुभारंभ



निर्दलीय विशेष

भोपाल। गांधी भवन न्यास द्वारा विगत कई वर्षों से आयोजित की जा रही 'आओ जानें गांधी को' प्रतियोगिता के अंतर्गत आज से गांधी सप्ताह की शुरुआत हुई। सात दिनों तक चलने वाली इस विशेष श्रृंखला का शुभारंभ पहले दिन लघु नाटिका प्रतियोगिता से हुआ।

'गांधी जी के सपनों का भारत' विषय पर आयोजित लघु नाटिका प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों की सात टीमों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शताधिक विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक प्रस्तुतियों के माध्यम से गांधी जी के विचारों, मूल्यों और उनके सपनों के भारत की कल्पना को मंच पर अत्यंत प्रेरक व प्रभावी ढंग से जीवंत किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुतियों का मूल्यांकन तीन सदस्यीय निर्णायक मंडल द्वारा किया गया। निर्णायक मंडल में वरिष्ठ रंगकर्मी, थिएटर आर्टिस्ट एवं ओटीटी प्लेटफॉर्म की अभिनेत्री श्रीमती भावना, रंगकर्मी सुश्री संजना तथा वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती मृदुल त्यागी



शामिल रहें। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में गांधी भवन न्यास के वरिष्ठ न्यासीद्वय महेश सक्सेना एवं अरुण कुमार डनायक तथा वरिष्ठ गांधीवादी कैलाश आदमी उपस्थित रहे। विभिन्न विद्यालयों से आए विद्यार्थियों के साथ उनके शिक्षकगण भी कार्यक्रम में सहभागी बने। विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों में गांधी जी के विचारों के

साथ-साथ समानता, अहिंसा, स्वच्छता, सद्भाव, आत्मनिर्भरता और बेहतर समाज की कल्पना की सुंदर झलक देखने को मिली। गांधी भवन न्यास के कार्यकर्ताओं ने सामूहिक प्रयास से इस आयोजन को सार्थक और जीवंत बनाया। कार्यक्रम स्थल पर गांधी भवन द्वारा साहित्य एवं खादी का स्टॉल भी लगाया

गया, जिसे विद्यार्थियों, शिक्षकों और उपस्थित लोगों ने खूब पसंद किया तथा साहित्य एवं खादी उत्पादों की खरीदारी भी की। गांधी सप्ताह का यह पहला दिन इस विश्वास के साथ आगे बढ़ा कि गांधी को जानना केवल इतिहास को जानना नहीं, बल्कि उनके विचारों को अपने जीवन और समाज में उतारने की दिशा में एक कदम बढ़ाना है।

दैनिक निर्दलीय को उक्त जानकारी गांधी भवन न्यास के सचिव अंकित मिश्रा ने दी। उन्होंने बताया कि उक्त प्रतियोगिताएं प्रतिदिन प्रातः ११ से दोपहर एक बजे तक गांधी भवन के मोहनिया कक्ष में संपन्न होंगी। इन प्रतियोगितायों में अतिथि, पर्यवेक्षक एवं निर्णायक मंडल सदस्य भी मुख्य किरदार के रूप में मौजूद रहेंगे। उन्होंने बताया कि गांधी सप्ताह में प्रतियोगिता के अगले दिन ८ सितंबर को पत्र लेखन, ९ सितंबर को वाद विवाद प्रतियोगिता, १० सितंबर को गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम विषयक चित्रकला, ११ सितंबर को विनोबा जयंती पर समूह भजन, १२ सितंबर को कविता लेखन और १४ सितंबर को चलभाष (मोबाइल) रील स्पर्धा का आयोजन होगा।